11

प्लेसीबोः यूँ बेअसर ही सही, फिर भी...

दवा के मरीज़ों पर होने वाले प्रभाव-कुप्रभाव के साथ-साथ दवा निर्माता मरीज़ों में प्लेसीबो इफेक्ट का अध्ययन भी करते हैं। दरअसल, हमारा मन शरीर को कई अनजान तरीकों से नियंत्रित करता है। इसलिए दवा की कारगरता पता करने के लिए कब दवा काम कर रही है और कब मन शरीर को स्वस्थ होने का अहसास दिला रहा है, इसे जानना भी ज़रूरी है।

प्लेसीबो इफेक्ट के मद्दे नज़र, औषधि निर्माताओं द्वारा बाज़ार में लाई जाने वाली दवा को प्लेसीबो नियंत्रित डबल ब्लाइंड परीक्षण से गुज़रना होता है। प्लेसीबो प्रभाव के कई पहलुओं का खुलासा, इस लेख में किया गया है।

लैंगिकता संवाद शिविर

किशोरावस्था की दहलीज़ पर खड़े किशोरों को लैंगिकता शिक्षण देना चाहिए, इस बात से काफी लोग सहमत हैं। लेकिन इस शिक्षण में अभी भी काफी ज़ोर स्त्री-पुरुष प्रजनन तंत्र को समझाने तक ही सीमित है। किशोरों के शारीरिक विकास के साथ-साथ उनका मानसिक विकास भी हो रहा है इसलिए यह बेहद ज़रूरी है कि उनसे शारीरिक बदलाव के साथ-साथ लड़के-लड़कियों के प्रति सहज आकर्षण, बचकानी हरकतों, अश्लीलता, छेड़छाड़, यौन-शोषण, उत्तेजित व्यवहार, तनाव, लैंगिक भेदभाव, स्त्री-पुरुषों को लेकर पूर्वाग्रहों, समलैंगिकता, वेश्यावृत्ति आदि अनेक मुद्दों पर खुलकर संवाद किया जाए। पूना का एक समूह आरोग्य भान (आभा), इसी तरह के लैंगिकता संवाद शिविरों का आयोजन करता है। इस लेख में ऐसी एक कार्यशाला का विस्तार से वर्णन किया गया है।

43

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-18 (मूल अंक-75), मई-जून 2011

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

5 | **आयु मिश्रण**
डेनियल ग्रीनबर्ग

11 | **प्लेसीबो: यूँ बेअसर ही सही...**
वसन्त नटराजन

16 | **हायड्रिला और ऑक्सीजन वाला प्रयोग**
कालू राम शर्मा

25 | **कबूतरखाने का सिद्धान्त**
एस. श्रीनिवासन

35 | **सामाजिक विज्ञान के चश्मे से जो मुझे मिला**
निधि तिवारी

43 | **लैंगिकता संवाद शिविर**
मोहन देशपांडे

59 | **इंग्लिश रीडर - किन मानकों पर है खरी?**
शिवानी तनेजा

69 | **कुछ और गतिविधियों से भाषा शिक्षण**
दिलिप चुघ

77 | **घर**
रस्किन बॉण्ड

81 | **कहानी में लय होनी चाहिए**
कमलेश चन्द्र जोशी

90 | **लाइम बटरफ्लाई**
किशोर पंवार